हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय-संगोष्ठी

दिनांक- 28-29 अगस्त, 2019

कार्यक्रम स्थल – रापज्योर कावेरी हॉल, 5 माइल, गंगटोक

विषय – लोक-साहित्य की रचनात्मक संवेदना : परंपरा एवं युगबोध

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 28-29 अगस्त, 2019 को **'लोक साहित्य की रचनात्मक संवेदना : परंपरा एवं युगबोध'** विषय पर केंद्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है । संगोष्ठी हेतु मुख्यत: निम्नलिखित उपविषयों का चयन किया गया है –

- पूर्वोत्तर भारत का लोक साहित्य
- लोक साहित्य में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति
- लोक साहित्य और रंगमंच
- लोक साहित्य में वैश्विक चेतना
- लोक साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
- लोक साहित्य में पर्यावरण
- हिंदी सिनेमा में लोक
- लोक साहित्य में स्त्री
- हिंदी साहित्य में लोक
- लोक साहित्य का भाषिक सौन्दर्य
- लोक साहित्य और हाशिये का समाज

विषय-प्रतिपादन

समय, समाज और संस्कृति को जानने-समझने के लिए इतिहास के उन पन्नों को पलटने से कहीं ज्यादा आवश्यकता लोक के उस अलिखित अथवा मौखिक इतिहास को खंगालने की होती है, जिसे अनगढ़, अशास्त्रीय, गंवारू कहकर ख़ारिज किया जाता रहा है। यही अनगढ़ता व अशास्त्रीयता इसकी ताकत है। लोक सहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक-साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव जीवन का इतिहास। उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सब कुछ समाविष्ट है। इसकी व्यापकता इतनी अधिक है कि यह जीवन के हर हिस्से, हर पहलू को अपने में समाहित किए हुए हैं। लोक साहित्य में समूचा ज्ञान, व्यवहार, सांस्कृतिक तत्त्व, कौशल और धार्मिक विश्वास, परंपराएं व मान्यताएं सभी का समावेश है।

लोक साहित्य का सामाजिक मूल्य बहुत अधिक है। समाजशास्त्र के समुचित अध्ययन के लिए लोक साहित्य की महत्ता सुविदित है। भारतीय समाज का ढांचा किस प्रकार का रहा है, यह लोक-गीतों, लोक-कथाओं और लोकोक्तियों से भली-भांति समझा जा सकता है। भारत की संस्कृति कैसे उत्पन्न हुई, कैसे पनपी और विकसित हुई, इस रहस्य की कहानी अथवा इसका इतिहास हमें लोक साहित्य के सम्यक् अध्ययन से मिलता है। संस्कृतियों के इतिहास की परख लोक साहित्य से ही संभव है। यही वह कड़ियां हैं, जिन्होंने हमें इतिहास की लुप्त होती हुई कड़ियों को जोड़ने में सहायता पहुँचायी है। अतीत को वर्तमान से जोड़कर उसमें परस्पर समन्वय स्थापित करना इस साहित्य की एक अलग विशेषता रही है, जिसके परिणामस्वरूप ही यह केवल सांस्कृतिक धरोहर एवं बीते हुए कल की आवाज मात्र न होकर आज भी जीवन्त सर्जना है। लोक साहित्य का महत्व शैक्षणिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्रों में भी स्वीकार्य है।

लोक-साहित्य की भाषा शिष्ट और साहित्यिक न होकर साधारण जन की भाषा है और उसकी वर्ण्य-वस्तु लोक-जीवन में गृहित चरित्रों, भावों और प्रभावों तक सीमित है। उसकी रचना में व्यक्ति का नहीं बल्कि समूचे समाज का समवेत योगदान है। यही कारण है कि लोक-साहित्य का सरोकार किसी वैयक्तिक चेतना से न होकर समग्र लोक-जीवन की छाप से है। इसमें शिल्प-विधान के लिए कोई अभ्यास या कौशल परिलक्षित नहीं होता।

इस संगोष्ठी के माध्यम से मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत के साथ-साथ पूरे भारतीय लोक-साहित्य, समाज और संस्कृति को उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों और लोक-मर्मज्ञ विद्वानों के मध्य होने वाले विचार-विमर्श से लोक साहित्य के नूतन पक्ष प्रकट होने के साथ-साथ हिंदी साहित्य एवं अन्य अंतरानुशासनिक विषयों में शोध के नवीन मार्ग प्रशस्त होंगे।

इस संगोष्ठी में सहभागिता के इच्छुक शिक्षक, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों से आग्रह है कि वे उपर्युक्त विषयों पर अपना शोध-पत्र अधिकतम 3000 शब्दों में निर्धारित तिथि तक निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित करने की कृपा करें। शोध-पत्र की स्वीकृति संबंधी सूचना आपको ईमेल अथवा फोन द्वारा दी जाएगी।

शोध-पत्र भेजने की अंतिम तिथि – 20 अगस्त, 2019

ईमेल – hindidepartmentsu@gmail.com dshahu@cus.ac.in

प्रस्तुत किये जाने वाले शोध-पत्र (फॉन्ट- मंगल-यूनिकोड, साइज-12) वर्ड फ़ाइल में टंकित होना चाहिए। प्रतिभागी अपना संपर्क सूत्र मोबाईल नंबर व ईमेल का उल्लेख शोध-पत्र में अवश्य करें। सभी शोध-पत्र प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों को ठहरने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

संपर्क सूत्र –

(डॉ. दिनेश साहू, प्रभारी, हिंदी विभाग, मो. 7864878427)

(डॉ. चुकी भूटिया, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मो. 9609875813)

(डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मो. 6294913900)

आयोजक - मण्डल

संरक्षक

प्रो. अविनाश खरे
माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय

मार्गदर्शक

डॉ. कबिता लामा
संकायाध्यक्ष, भाषा एवं साहित्य संकाय

संगोष्ठी-संयोजक

डॉ. दिनेश साहू
प्रभारी, हिंदी विभाग

सह-संयोजक

डॉ. चुकी भूटिया, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

आयोजन समिति सदस्य

श्री कुलदीप सिंह, अतिथि प्राध्यापक, हिंदी विभाग